समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

३०० वाँ अंक

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

लोक कल्याण सेतु

मूल्य : ₹ ४.५०

मासिक समाचार पत्र

योगयात्रा विशेषांक

• प्रकाशन दिनांक : १५ जून २०२२ • वर्ष : २५ • अंक : १२ (निरंतर अंक : ३००) • भाषा : हिन्दी • पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

जो ब्रह्मज्ञान, आत्मसुख, आत्मशांति का प्रसाद महर्षि वसिष्ठजी के चरणों में श्रीरामजी ने पाया वही साँईं लीलाशाहजी के चरणों में पूज्य बापूजी ने पाया और उसीका स्वाद घोर कलियुग में लाखों-करोड़ों लोगों को चखाया ।

प्रत्याहारं चेन्द्रिययजनं प्राणायामः न्यासविधानम् ।
इष्टे पूजा जप तपभक्तिः न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥

'इन्द्रियों का नियमन व दमन, प्राणायाम, न्यास का विधान, इष्टदेव की पूजा, मंत्रजप, तपस्या व भक्ति - इनमें से कुछ भी श्रीगुरुदेव से बढ़कर नहीं है, श्रीगुरुदेव से बढ़कर नहीं है ।'

- भगवान शिवजी

गुरुपूर्णिमा : १३ जुलाई

जिन्होंने हमारे जीवन की बिगड़ी बाजी को सँवारा और हमें आध्यात्मिक ज्ञान की छाँव में बिठाया ऐसे परम हितैषी बापूजी के निर्दोष होते हुए भी कारागृह में रहते ९ साल ७ महीने ७ दिन बीत गये । हमारी विरह-वेदना को नजरअंदाज कर आहों में क्यों बदला जा रहा है ? कब मिलेगा हमें न्याय ? - विरह में बिलखती सत्संगी बहनें

दुनिया में यह ऐसा पहला चमत्कार है ९

गुरुदेव ने अप्सरा की माया से बचाया ५

समर्थ योगी की अभूतपूर्व कृपावृष्टि

ब्रह्मनिष्ठा स्वयं ही श्रेष्ठतम, अतुलनीय, अद्वितीय ऊँचाई है। ब्रह्मनिष्ठा के साथ यदि योग-सामर्थ्य भी हो तो दुग्ध-शर्करा योग की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ऐसा ही सुयोग देखने को मिलता है ब्रह्मवेत्ता पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के जीवन में। एक ओर जहाँ आपकी ब्रह्मनिष्ठा साधकों को सान्निध्यमात्र से परम आनंद, दिव्य शांति में सराबोर कर देती है, वहीं दूसरी ओर आपकी करुणा-कृपा से मृत गाय को जीवनदान मिलना, अकालग्रस्त स्थानों में वर्षा होना, वर्षों से निःसंतान रहे दम्पतियों को संतान होना, रोगियों के असाध्य रोग सहज में दूर होना, निर्धनों को धन प्राप्त होना, अविद्वानों को विद्वत्ता प्राप्त होना, घोर नास्तिकों के जीवन में भी आस्तिकता का संचार होना - इस प्रकार की अनेक चमत्कारिक घटनाएँ आपके योग-सामर्थ्य सम्पन्न होने का प्रमाण हैं।

ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु पूजनीय संत श्री आशारामजी बापू साधक-भक्तों को सत्संग, ध्यान तथा कुंडलिनी शक्तिपात योग व नादानुसंधान योग आदि के प्रयोगों द्वारा हँसते, खेलते, खाते, पहनते सहज में ही मुक्तिमार्ग की यात्रा करा रहे हैं। 'श्री गुरुग्रंथ साहिब' में आता है :

नानक सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति ॥ हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ॥

जिज्ञासु अपनी जिज्ञासापूर्ति के लिए सत्शास्त्र तो पढ़ते हैं लेकिन उनके गूढ़ रहस्य को न समझ पाने के कारण उनसे जीवन्मुक्ति का विलक्षण आनंद नहीं प्राप्त कर पाते। यह तो तभी सम्भव है जब वेदांत के महावाक्य **'अहं ब्रह्मास्मि'** की अंतर में अनुभूति किये हुए कोई 'सुदुर्लभ' सत्पुरुष मिल जायें।

पूज्यश्री से जो सौभाग्यशाली भक्त मंत्रदीक्षा लेते हैं व ध्यान योग शिविरों में आते हैं उन्हें आपकी अहैतुकी करुणा-कृपा से कुंडलिनी जागृति के दिव्य अनुभव होते हैं, जिससे चिंता-तनाव, हताशा-निराशा आदि पलायन कर जाते हैं और जीवन की उलझी गुत्थियाँ सुलझने लगती हैं। उनका काम राम में बदलने लगता है, ध्यान स्वाभाविक लगने लगता है और मन अंतरात्मा में आराम पाने लगता है। सामूहिक कुंडलिनी शक्तिपात के द्वारा बड़े-बड़े योगियों को बारह-बारह साल की कठोर साधनाएँ, तपस्याएँ करने के बाद भी जो अनुभूतियाँ नहीं होती हैं, सच्चा सुख, भगवदीय शांति नहीं मिलती, वह हजारों सामान्य लोगों को शक्तिपात शिविर के ३-४ दिनों में ही महसूस होने लगती है। पूज्य बापूजी लाखों संसारमार्गी जीवों को कलियुग के कलुषित वातावरण से प्रभावित होने पर भी दिव्य शक्तिपात-वर्षा से सहज ध्यान में डुबाते हैं। शक्तिपात का इतना व्यापक प्रयोग इतिहास में कहीं भी देखा-सुना नहीं गया है। कृपासिंधु बापूजी का सत्संग-श्रवण करनेमात्र से साधना में उन्नत होने की कुंजियाँ मिल जाती हैं और शास्त्रों के रहस्य हृदय में प्रकट होने लगते हैं।

पूज्यश्री कहते हैं : "अपने देवत्व में जागो। एक ही शरीर, मन, अंतःकरण को कब तक अपना मानते रहोगे ? अनंत-अनंत अंतःकरण, अनंत-अनंत शरीर जिस सच्चिदानंद में भासमान हो रहे हैं, वह शिवस्वरूप तुम हो। फूलों में सुगंध तुम्हीं हो। वृक्षों में रस तुम्हीं हो। पक्षियों में गीत तुम्हीं हो। सूर्य और चाँद में चमक तुम्हारी है। अपने **'सर्वोऽहम्'** स्वरूप को पहचानकर खुली आँख समाधिस्थ हो जाओ। देर न करो, काल कराल सिर पर है।"

वर्तमान में पूज्य बापूजी के सान्निध्य के अभाव से विश्व के आध्यात्मिक विकास में जो बाधा उत्पन्न हुई है उसकी क्षतिपूर्ति कोई नहीं कर सकता।

लोक कल्याण सेतु

मासिक
समाचार पत्र

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २५ अंक : १२ (निरंतर अंक : ३००)
प्रकाशन दिनांक : १५ जून २०२२ मूल्य : ₹ ४.५०
पृष्ठ संख्या : ३० (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
राकेशसिंह आर. चंदेल
प्रकाशन-स्थल :
संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण-स्थल :
हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर, (हि.प्र.) -१७३०२५.
सम्पादक : रणवीर सिंह चौधरी

सम्पर्क पता :
'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.

*Email: lokkalyansetu@ashram.org,
*ashramindia@ashram.org
*Website: www.lokkalyansetu.org
www.ashram.org

लोक कल्याण सेतु' रुद्राक्ष मनका योजना

पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका या जप-माला प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर !...सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

सदस्यता शुल्क :

भारत में :		विदेशों में :	
(१) वार्षिक :	₹ ४५	(१) पंचवार्षिक :	US $५०
(२) द्विवार्षिक :	₹ ८०	(२) आजीवन :	US $१२५
(३) पंचवार्षिक :	₹ १९५		
(४) आजीवन :	₹ ४७५		

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

- महापुरुष के दर्शन का चमत्कार – महंत चंदीराम.....४
- गुरुकृपा बनी महौषधि – ब्रिजेश तिवारी..... ५
- गुरुदेव ने अप्सरा की माया से बचाया.....६
- और रूह फिर से दाखिल हो गयी !.....८
- अद्भुत हैं उनकी लीलाएँ.....९
- योगलीलाओं की शृंखला में जुड़ा एक सुवर्ण अध्याय.....१२
- शक्तिपात-वर्षा का चमत्कार – भगवती बहन..... १६
- आश्चर्य बनी पूज्य बापूजी की आभा..... १९
- गुरुपूर्णिमा की विशेषता.....२०
- वर्षा ऋतु में लाभकारी औषधीय प्रयोग..... २२
- सेवा-अनुष्ठान से मिला महाबल – विनय विश्वकर्मा..... २३
- लोक कल्याण सेतु रुद्राक्ष-मनका योजना.....२५
- श्रीगुरु स्तोत्रम्..... २६
- दृष्टि पड़नेमात्र से मिली जीवन को सही दिशा.....२८

* 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है। * 'अराधना' चैनल जम्मू में JK Cable पर उपलब्ध है।

*** विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग ***

अनादि बात सिर्फ खबर की — रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे

अराधना — रोज सुबह ७:३० व रात्रि ८:३० बजे

DIGIANA DIVYA JYOTI — रोज रात्रि १०-०० बजे

सेवाकार्य

Mangalmay Digital | Asharamji Bapu | Asharamji Ashram

आश्रम के आधिकारिक यूट्यूब चैनल्स

महापुरुष के दर्शन का चमत्कार

- महंत चंदीराम (भूतपूर्व चंदीराम कृपालदास)

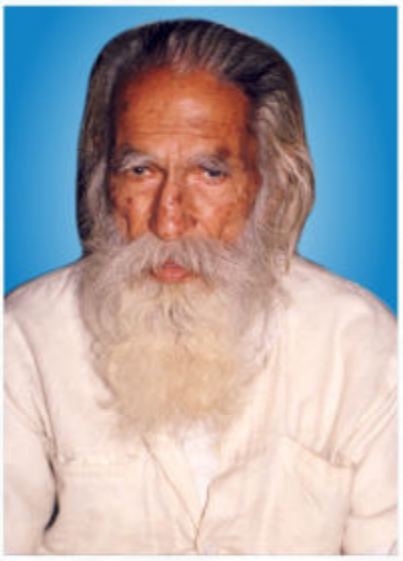

पहले मैं कामतृप्ति में ही जीवन का आनंद मानता था। मेरी दो शादियाँ हुईं परंतु दोनों पत्नियों के देहांत के कारण मैं ५५ वर्ष की उम्र में १८ वर्ष की लड़की से शादी करने को तैयार हो गया। शादी से पूर्व मैं पूज्यपाद स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज का आशीर्वाद लेने डीसा आश्रम में जा पहुँचा। आश्रम में वे तो नहीं मिले मगर जो महापुरुष मिले उनके दर्शनमात्र से न जाने क्या हुआ कि मेरा सारा भविष्य ही बदल गया। उनके योगयुक्त विशाल नेत्रों में न जाने कैसा तेज चमक रहा था कि मैं अधिक देर तक उनकी ओर देख नहीं सका और मेरी नजर उनके चरणों की ओर झुक गयी। मेरी

धन्य हैं ऐसे सर्वसमर्थ सद्गुरुदेव

तथा अद्भुत हैं उनकी लीलाएँ

पूज्यश्री का आत्मिक दिव्य प्रेम, सरल, मधुर वाणी और योग-सामर्थ्य ऐसे मोहक हैं कि वे जहाँ-जहाँ जाते हैं वहाँ परायों को अपना बना लेते हैं और अपनों को उत्साहित करके परमात्मा के पथ पर अग्रसर कर देते हैं। डालते हैं कुछ घटनाओं पर एक नजर :

भयंकर बाढ़ थामी

सन् १९७३ में साबरमती नदी में भयंकर बाढ़ आयी थी। नदी खतरे के स्तर को भी लाँघकर

योगलीलाओं की शृंखला में जुड़ा

एक सुवर्ण अध्याय

२९ अगस्त २०१२ को मोरबी से पूज्य बापूजी हेलिकॉप्टर से गोधरा के लिए रवाना हुए। गोधरा पहुँचने पर जब हेलिकॉप्टर धरती से करीब १०० फीट ऊपर था तब पायलट का हेलिकॉप्टर पर से नियंत्रण छूट गया... और यह क्या ! हेलिकॉप्टर सीधा जमीन पर उतरने के बजाय मुँह के बल गिरा और उसके पुर्जे-पुर्जे अलग हो गये।

बापूजी जिस ओर बैठे थे उसी ओर से हेलिकॉप्टर धड़ाम-से गिरकर उलटा हो गया। पंखे के टुकड़े-टुकड़े होकर कई फीट दूर उछल गये। हेलिकॉप्टर का आगे का हिस्सा जमीन पर जोर से टकराया और पीछे का हिस्सा आकाश की ओर उछलकर उसके पुर्जे हवा में बिखर गये। हेलिकॉप्टर खतरनाक ढंग से उलट-पुलटकर बापूजी की

गुरुपूर्णिमा की विशेषता

- पूज्य बापूजी

गुरुपूनम पर्व ऐहिक और स्वर्गीय सुख को नश्वर समझाकर सुख-दुःख से पार परमानंद - महान परमात्मा की प्राप्ति करने की प्रेरणा देता है।

(गुरुपूर्णिमा : १३ जुलाई)

गुरुपूर्णिमा के पावन पर्व पर

लोक कल्याण सेतु

रुद्राक्ष-मनका योजना

सम्पर्क : लोक कल्याण सेतु कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, साबरमती, अहमदाबाद-५

सम्पर्क :
(079) 61210739

आज ही ऑर्डर लिखवायें

VISIT OUR WEBSITE

lokkalyansetu | lokkalyansetu@gmail.com | www.lokkalyansetu.org

पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष-मनका प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर ! लोक कल्याण सेतु के कम-से-कम २५ सदस्य बनाने पर अथवा २५ प्रतियाँ हर माह कम-से-कम १ वर्ष तक मँगवाने पर यह मनका प्राप्त कर सकते हैं। सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ अवश्य उठायें।

विशेष : गुरुपूर्णिमा पर्व पर मंत्रदीक्षित साधक, सेवाधारी तथा समितियाँ लोक कल्याण सेतु की ५०/१००/२००/५०० प्रतियाँ अपनी ओर से बाँटने या बँटवाने की सेवा कर सकते हैं। इस हेतु आज ही सम्पर्क कर अपना ऑर्डर लिखवा

आँवला रस

दीर्घायु व यौवन प्रदाता, विविध रोगों में लाभदायी

यह वीर्यवर्धक, त्रिदोषशामक व गर्मीशामक है । इसके सेवन से आँखों व पेशाब की जलन, अम्लपित्त (hyperacidity), श्वेतप्रदर, रक्तप्रदर, बवासीर आदि पित्तजन्य अनेक विकारों में लाभ होता है ।

रसायनरहित (chemical free)

देशी गुड़

बल-वीर्यवर्धक, वात-पित्तशामक, मूत्र की शुद्धि करनेवाला एवं नेत्र-हितकर । हड्डियों और मांसपेशियों को सशक्त बनाने में सहायक ।

आँवला इलायची एवं आँवला खसखस शरबत

ये शीतल, पौष्टिक, स्वादिष्ट, रुचिकर एवं हृदय, मस्तिष्क तथा आँतों को बल प्रदान करनेवाले हैं । ये तुरंत ऊर्जा व स्फूर्ति देकर मन को प्रसन्न करनेवाले हैं तथा गर्मी-संबंधी समस्याओं को दूर करते हैं ।

बेल फल शरबत

यह शीतलताप्रदायक, बलवर्धक एवं रुचिकर है । इसके सेवन से दिमागी थकावट दूर होकर स्फूर्ति और प्रसन्नता बढ़ती है ।

घृतकुमारी रस (Aloe vera juice)

ऑरेंज फ्लेवर में

यह विविध त्वचा-विकारों, पीलिया, नेत्र व स्त्री रोगों, आंतरिक जलन आदि में लाभदायी है । त्रिदोषशामक, जठराग्निवर्धक एवं यकृत (liver) के लिए वरदानरूप है ।

एलोवेरा जेल

यह त्वचा को कोमल बनाता है और उसमें निखार लाता है । त्वचा की कील-मुँहासे, काले दाग-धब्बे व झुर्रियों से रक्षा करता है । यह रूखी व तैलीय त्वचा दोनों के लिए हितकारी है । त्वचा को हानिकारक किरणों व प्रदूषण से बचाता है ।

त्रिफला चूर्ण व टेबलेट

ये आँखों की सूजन, लालिमा, दृष्टि की कमजोरी, कब्ज, मधुमेह (diabetes), मूत्ररोग, त्वचा-विकार, जीर्णज्वर व पीलिया में लाभदायक हैं ।

संशमनी वटी

रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ाकर संक्रामक रोगों से रक्षाप्रद । सभी प्रकार के बुखार, खाँसी, सर्दी, बीमारी के बाद की कमजोरी, खून की कमी आदि में लाभदायी ।

अच्युताय मलहम

यह दाद, खाज, खुजली आदि चमड़ी के रोगों तथा फंगल व बैक्टीरियल इन्फेक्शन में लाभकारी है, साथ ही पैरों की कटी-फटी एड़ियों के लिए बहुत उपयोगी है ।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों द्वारा सर्वांगीण उन्नति के शिखर सर करते हुए नौनिहाल

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2021-2023
Issued by SSPO's-AHD
Valid upto 31-12-2023
LWPP No. PMG/NG/045/2021-2023
(Issued by PMG GUJ. valid upto 31-12-2023)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.
Publishing on 15th of every month

फरीदाबाद

भोपाल

सोलापुर (महा.)

जालंधर (पंजाब)

राजनांदगाँव (छ.ग.)

वणांकबोरी, जि. खेड़ा (गुज.)

बालोद (छ.ग.)

बाड़मेर (राज.)

डीसा, जि. बनासकांठा (गुज.)

कटक (ओड़िशा)

गोंदिया (महा.)

भोरमदेव, जि. कवर्धा (छ.ग.)

बेलोदी, जि. दुर्ग (छ.ग.)

छतरपुर (म.प्र.)

कैथल (हरि.)

ग्वालियर (म.प्र.)

गोरवा-वडोदरा

वैशाख की गर्मी में विशेष हितकारी शीतल शरबत, छाछ आदि वितरण सेवाओं के कुछ दृश्य

भावनगर (गुज.)

कवर्धा (छ.ग.)

कानपुर

रायपुर (छ.ग.)

गाजियाबाद (उ.प्र.)

दानापुर-पटना

लखनऊ

रतलाम (म.प्र.)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक और मुद्रक** : राकेशसिंह आर. चंदेल **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चर्स, कुंजा मतरालियों, पाँटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : रणवीर सिंह चौधरी